अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्रीमती वैशाली दाजीसाहेब मोहिते का एम्.फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध "साठोत्तर हिन्दी - लोकधर्मी नाटकों का अनुशीलन ("दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" के परिप्रेक्ष्य में)" परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

प्रा.जे.आर.जाधव
हिन्दी विभागाध्यक्ष,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

L. B. S. COLLEGE SATARA

श्री.आर.ए.कदम
प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर 416004

डॉ. गजानन शंकर सुर्वे
एम्.ए., पीएच्.डी.
पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा – 415 002 (महाराष्ट्र)

एम्.के. होटल बिल्डिंग,
कवडे नगर,
नयी सांगवी,
पुणे – 411 027
(महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं, डॉ. गजानन शंकर सुर्वे, पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि श्रीमती वैशाली दाजीसाहेब मोहिते ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. हिन्दी उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबन्ध **"साठोत्तर हिन्दी – लोकधर्मी नाटकों का अनुशीलन ("दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" के परिप्रेक्ष्य में)"** मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्रीमती वैशाली दाजीसाहेब मोहिते के शोध–कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

मैं, यह भी प्रमाणित करता हूँ कि प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबन्ध कला–विद्या–शाखा के अन्तर्गत हिन्दी विषय से संबंधित नाटक–विधा में सन्निविष्ट है।

पुणे,
दिनांक :– २४.१२.१९९७

डॉ. गजानन शंकर सुर्वे
शोध–निर्देशक के हस्ताक्षर

प्रख्यापन

साठोत्तर हिन्दी – लोकधर्मी नाटकों का अनुशीलन

("दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" के परिप्रेक्ष्य में)

यह शोध–प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. हिन्दी के लघु–शोध–प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

श्रीमती वैशाली दाजीसाहेब मोहिते
शोध–छात्रा के हस्ताक्षर

सातारा
दिनांक :– 28.12.1997

साठोत्तर हिन्दी – लोकधर्मी नाटकों का अनुशीलन
("दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" के परिप्रेक्ष्य में)

प्राक्कथन

मनुष्य साहित्य का सृष्टा है। वह अपने साहित्य में परिवेश को साकार करता है। साहित्य की अन्य विधाओं से नाटक अलग है जो मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। साहित्य की अन्य विधा की तरह नाटकों में भी अनेक विषयों को लेकर नाटकों का सृजन किया गया है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विषयों को लेकर उनका जीता जागता चित्रण नाटकों में किया जाता है। लेकिन साठोत्तर काल में हिन्दी नाटकों में एक नयी धारा ने जन्म लिया जिसका नाम लोकधर्मिता है। साठ साल के पूर्व, भारतेन्दु काल में तथा उसके पूर्व भी रामलीला, रासलीला, कीर्तनियां, यक्षगान, ख्याल, यात्रा, स्वांग आदि के रूप में नाट्य "लोक" में जीवित था। लोक कलाकारों द्वारा इसे लोकमंच पर प्रस्तुत किया जाता रहा जिसे देखने "लोक" आया करता। उनके थके हुए मन का यही एक मनोरंजन का साधन था और आज भी है।

इसमें सन्देह नहीं कि भारत में लोकधर्मी नाट्य की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है जिसमें हिन्दी लोकधर्मी नाटकों का प्रचलन भी महत्वपूर्ण है। विशेष बात यह है कि लोकधर्मी नाट्य मुख्यत:"लोक"से संबंधित होते हैं। साठोत्तर काल में लोकधर्मी नाट्य को नया वेश परिधान कर मंच पर प्रस्तुत करने में आधुनिक नाटककार कामयाब हुए हैं। साठोत्तर लोकधर्मी नाटकों की परम्परा 1997 तक चली आयी है जो हिन्दी की समृध्द लोकधर्मी नाट्य परम्परा का द्योतक है। डॉ.लाल, जगदीशचन्द्र माथुर, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, शरद जोशी, मणि मधुकर, हमीदुल्ला, भीष्म साहनी ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने साठोत्तर काल में हिन्दी लोकधर्मी नाटकों को उजागर करने में विशेष योगदान दिया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध का प्रतिपाद्य साठोत्तर हिन्दी लोकधर्मी नाट्य परम्परा का संक्षिप्त परिचय देना तथा मणि मधुकर के "दुलारी बाई" और हमीदुल्ला के "ख्याल भारमली" नाटकों का लोकधर्मी नाटकों के सन्दर्भ में विशद विवेचन करना है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छह अध्यायों में विभाजित है –

अध्याय : 1 – प्रस्तुत अध्याय का नामकरण "विषय – प्रवेश" है, जिसमें मानव : साहित्य का सृष्टा, लोक : शब्द प्रयोग, परिभाषा, लोकसाहित्य : परिभाषा, अन्य पर्याय, प्रकार, लोकनाट्य – परिभाषा, स्वरूप, प्राचीनता, प्रकार : धार्मिक नाट्य – रासलीला, रामलीला, यात्रा नाटक, यक्षगान, कीर्तनियाँ, अंकियानाट, छऊ, तेरूकूत्तु, भगत, सामाजिक नाट्य – ख्याल : नौटंकी ख्याल, जयपुरी ख्याल, स्वांग – बहुरूपिया, भांड, भवाई, तमाशा , विदेसिया, लोकधर्मी नाट्यों की विशेषताएँ आदि पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय : 2 – प्रस्तुत अध्याय "साठोत्तर हिन्दी लोकधर्मी नाटक : एक सर्वेक्षण" नाम से अभिहित है, जिसके अन्तर्गत 1960 पूर्व लोकधर्मी नाटक : विहंगमावलोकन, लोकधर्मी नाट्य परम्परा : विभाजन रेखा, हिन्दी लोकधर्मी नाट्य परम्परा : इन्दरसभा, भारतेन्दु और भारतेन्दु युग, पारसी रंगमंच, पृथ्वी थियेटर आदि की चर्चा की है। साथ ही स्वातंत्र्योत्तर लोकधर्मी : उन्मुख नाटक – आगरा बाजार, अन्धायुग और साठोत्तर हिन्दी लोकधर्मी नाटक : एक सर्वेक्षण में लक्ष्मीनारायण लाल के "नाटक तोता-मैना", "सुर्यमुख", "कलंकी", "एक सत्य हरिश्चन्द्र", "सब रंग मोहभंग", जगदीशचन्द्र माथुर के "पहला राजा", "दशरथनन्दन", सर्वेश्वरदयाल सक्सेना "बकरी", सुशीलकुमार सिंह "सिंहासन खाली है" आदि नाटकोंसहित राकेश के "रामलीला" तक का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। विशेष विवेच्य नाटक – मणि मधुकर का "दुलारी बाई" और हमीदुल्ला का "ख्याल भारमली" पर लोकधर्मिता की दृष्टि से विवेचन किया है।

अध्याय : 3 – प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक ""दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में लोकजीवन एवं लोकसंस्कृति" रखा गया है। इसमें लोकजीवन : विवाह, नारी शृंगार स्वच्छन्द प्रेम, नारी शोषण, जनसंख्या का सवाल, खान-पान, समाज के विभिन्न स्तर : लालची दुलारी, कटोरीमल व्यापारी, ननकू मोची आदि, आधुनिक राजनीति का पर्दाफाश : पार्टी और नेता, ग्राम पंचायत, राजा का कर्तव्य, राजा का शौक (शिकार), चन्दा इकठ्ठा करना आदि पर प्रकाश डाला गया

है। साथ ही लोकसंस्कृति के अन्तर्गत देव–देवताओं का स्तवन, मन्दिर की प्रतिष्ठा, मिथक और अंधविश्वास, अन्य लोकविश्वास, पाखंड, लोकखेल आदि पर प्रकाश डाला गया है।

<u>अध्याय : 4</u> – प्रस्तुत अध्याय को <u>"दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में लोकनाट्य शैली"</u> संज्ञा दी गई है। इस अध्याय में मंगलाचरण की विशिष्टता, सूत्रधार और अभिनेत्री का प्रयोग, भोपा–भोपी का प्रयोग, गायन–मण्डली का प्रयोग, लोककथाओं का प्रयोग : पुतले की लोककथा, डंडे की लोककथा, पुश्तैनी जूतों की लोककथा, लालच बुरी बला है – लोककथा, भारमली की लोककथा, लोकसंवाद और लोकभाषा, लोकगीत, लोकनृत्य, लोकवाद्य, शेरो–शायरी, कठपुतली का खेल – पुतले (मुखौटे), पूर्वदीप्ति शैली, स्वप्न शैली, हास्य और व्यंग्य की शिल्पगत विशिष्टता प्रतिपादित की गई है।

<u>अध्याय : 5</u> – प्रस्तुत अध्याय का नामकरण <u>"दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में मंचीय तत्व"</u> किया गया है। जिसके अन्तर्गत "दुलारी बाई" और "ख्याल भारमली" में मंचसज्जा, दृश्यविधान, वेशभूषा, पात्राभिनय (पात्रों का क्रिया व्यापार), प्रकाश योजना, ध्वनि व संगीत के औचित्यपूर्ण प्रयोग पर समुचित प्रकाश डाला गया है। साथ ही रंगमंचीय प्रस्तुति और दर्शकीय संवेदना भी स्पष्ट की गई है।

<u>अध्याय : 6</u> – प्रस्तुत अध्याय <u>"समापन"</u> शीर्षक से अभिहित है। इस अध्याय में शोध–प्रबन्ध का सार तथा विशेष विवेच्य नाटकों का मूल्यांकन किया गया है।

<u>कृतज्ञता–ज्ञापन</u>

प्रस्तुत लघु–शोध–प्रबन्ध श्रध्देय गुरूवर डॉ.गजानन शंकर सुर्वे, पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) के आत्मीय निर्देशन में लिखा है। अपना अमूल्य समय देकर शोध–प्रबन्ध के विषय–चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक उन्होंने जिस आत्मीयता, तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है, उसके प्रति शब्दों के माध्यम से कृतज्ञता व्यक्त करना मेरे लिए कठिन है। फिर भी इतना अवश्य है कि शोध–प्रबन्ध की पूर्ति का सारा श्रेय उन्हीं के आशीर्वचन और मार्गदर्शन का प्रतिफलन है। उन्होंने अपने निजी समृध्द ग्रंथालय से समय समय पर मुझे अनेक नाटक, सन्दर्भ ग्रंथ तथा कोश ग्रंथादि अध्ययन के लिए देकर उपकृत किया है। अतः मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत शोध–कार्य में गुरूपत्नी श्रीमती देवलता सुर्वे मौसी का मैं विशेष आभार मानती हूँ जिन्होंने मेरी माँ समान मेरा खयाल रखा, गुरूकन्या कामायनी सुर्वे ने भी छोटे मोटे कार्यो में समय समय पर मेरी सहायता की है, उसके लिए मैं शुक्रगुजार हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के पूर्व प्राचार्य पुरूषोत्तम सेठ और प्राचार्य आर.ए. कदम के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.पी.एस्.पाटील, डॉ.अर्जुन चव्हाण की सहायता के लिए आभार व्यक्त करती हूँ। प्रा.जे.आर.जाधव, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के प्रति मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने मुझे अपने निजी ग्रंथालय से कुछ किताबें पढने को दी और मुझे प्रेरणा दी।

प्रा.श्रीधर साळुंखे, प्रा.डॉ.छायादेवी घोरपडे, प्रा.खैरून्निसा खान, प्रा.रूकसाना पठाण, प्रा.डॉ.टी.आर.पाटील, प्रा.अरूंधती राजेशिर्के और श्री.आर.व्ही.पाटील ने मुझे इस शोध–कार्य में प्रेरणा दी इसलिए मैं इनका आभार मानती हूँ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के ग्रंथालय अध्यक्ष श्री.जगताप और सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरे स्वर्गस्थ पिताजी – दाजीसाहेब मोहिते और मेरी माताजी लीलादेवी ने मुझे अधिक पढाई के लिए जिद् निर्माण की। मेरी स्वर्गस्थ बहन अंजली को मैं कैसे भूलूँ? अतः इनके सामने श्रध्दाभाव से विनम्र होकर नतमस्तक होने में ही मै गर्व का अनुभव करती हूँ।

मेरे पितातुल्य बडे भाई अनिल मोहिते और मातातुल्य बडी भाभी सुलेखा की प्रेरणा और आशीर्वचन प्रस्तुत शोध–कार्य के लिए विशेष उपयोगी साबित हुए हैं। मेरी बहनें प्रेमलता राजेशिर्के, दमयंती सुर्वे और मेरे जिजाजी श्री.रमेश राजेशिर्के, श्री.गुलाब सुर्वे ने भी बहुत मदद की हैं। मेरे भाई शिवाजी ने भी बड़े उत्साह से मेरी सहायता की। मेरे चाचाजी राजाराम, अर्जुनराव, मानसिंगराव, भालचन्द्र, उदयसिंह, अशोक मोहिते और मेरी दोनों बुआ कांचनमाला राजेशिर्के और संगीता सुर्वे की मैं आभार मानती हूँ। समस्त मोहिते परिवार, शिंदे परिवार और मेरे पिताजी के प्रिय मित्र पंडितराव धामणेकर, कोल्हापुर ने भी मेरी सहायता की। मेरे मामा जी हनुमंतराव और नारायणराव सुर्वे की मैं शुक्रगुजार हूँ। मेरे इस शोध–कार्य में ये सभी बराबरी के हिस्सेदार हैं। अतः इनकी हार्दिक अनुकम्पा के लिए मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगी।

इसके अतिरिक्त मेरे सभी रिश्तेदार, मेरी सहेलियाँ और शुभचिंतकों का मैं आभार मानती हूँ जो इस शोध-कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहायक साबित हुए हैं। प्रबन्ध लेखन के लिए जिन उपजीव्य ग्रंथों, नाटकों, संदर्भ ग्रंथों का मैने उपयोग किया इन सभी लेखकों के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। अंत में आत्मीयता और तत्परता से सुचारूरूप में प्रबंध का टंकलेखन करनेवाले **मे. रिलॅक्स सायक्लोस्टाईल,** सातारा के श्री. मुकुन्द ढवले और उनके सहायक श्री. राजू कुलकर्णी की अमूल्य सहायता के लिए मैं कृतज्ञ रहूँगी।

217, गुरूवार पेठ,
सातारा (महाराष्ट्र)

श्रीमती वैशाली दाजीसाहेब मोहिते